RNI NO. : DEL/BIL/2004/14598

Youngster

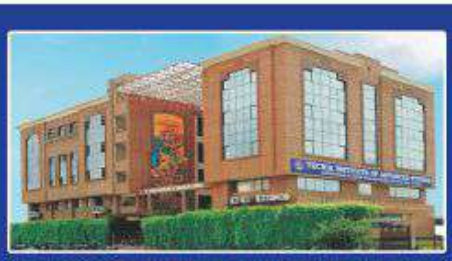

WHERE DREAM CHISELS INTO REALITY

YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • SEPTEMBER 2024 • PAGES 4 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HINDI/ENGLISH)

On the Spot Article Writing Competition

The Literary Club of Tecnia Institute of Advanced Studies organized an "On the Spot Article Writing Competition" on 30 August 2024, under the dynamic leadership of its nodal officer, Mr. Amit Sharma. The competition aimed to encourage students to express their thoughts and creativity through writing, and to enhance their understanding of contemporary issues.

The event saw enthusiastic participation from students across various departments. The student coordinators for the event, Pragyansh, Naman, and Anjali, played a crucial role in ensuring the smooth conduct of the competition.

Participants were provided with three thought-provoking themes on the spot, from which they had to choose one topic for their article. The themes were: Mental Health, Impact of Corona and Digital India. These themes were selected to allow students to showcase their knowledge on relevant social issues while offering a platform for personal reflection and critical analysis.

The event saw enthusiastic participation from students across various departments. The student coordinators for the event, Pragyansh, Naman, and Anjali, played a crucial role in ensuring the smooth conduct of the competition.

Participants were provided with three thought-provoking themes on the spot, from which they had to choose one topic for their article. The themes were: Mental Health, Impact of Corona and Digital India. These themes were selected to allow students to showcase their knowledge on relevant social issues while offering a platform for personal reflection and critical analysis.

The competition tested not only the participants' writing skills but also their ability to think on their feet and articulate ideas effectively within a limited time frame. Each participant was allotted 60 minutes to write their article.

The article writing competition was open to all students of the Institute. Participants were required to submit original articles that addressed the theme in either Hindi or English language, as per their choice. The competition witnessed enthusiastic participation from students across various departments. The articles showcased a wide range of perspectives, reflecting the depth of thought and creativity among the student community.

The articles reflected deep insights, creative approaches, and analytical perspectives on the chosen themes. Many students highlighted the importance of mental health awareness, while others discussed the long-lasting effects of the COVID-19 pandemic. The topic of Digital India sparked discussions on technological advancements and their transformative impact on society.

Feature Writing Competition Of Literary Club

संस्मरणों की संस्कृति

पुस्तक समीक्षा: बबुआ...एक विरासत

मुकेश कुमार सिन्हा

पितरों के प्रति आगाध प्रेम, त्याग और समर्पण का भाव देखना हो, तो चले आइए बिहार के'गयाजी'। यहाँ ऐसे अनगिनत किस्सों से आप आसानी से रू-ब-रू हो पाइएगा। विज्ञान की तरक्की के बाद भी 'गयाजी' में यह परम्परा कायम है, जिसमें पितरों के प्रति श्रद्धा निवेदित है।

पितरों को सम्मान देना हमारी संस्कृति का हिस्सा है। इसी संस्कृति का निर्वहण करते हुए डॉ. नीलम श्रीवास्तव, पूनम श्रीवास्तव एवं समीर परिमल द्वारा अपने स्वर्गीय पिता को केन्द्रित एक किताब प्रकाशित की गयी है, जिसका नाम है- 'बबुआ...एक विरासत'। इस किताब में मधुसूदन बाबू उर्फ बबुआ को जानने-समझने वालों के आलेख संग्रहित हैं। मतलब, पारिवारिक सदस्यों के अलावा उनके सहकर्मी और शिष्यों द्वारा अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी है।

गोपालगंज यानी माता थावे की धरती। और, इसी ऐतिहासिक धरती पर अवस्थित है हथुआ। हथुआ 'राज' का अपना गौरवशाली इतिहास है। हथुआ पोस्ट ऑफिस के अंतर्गत एक गाँव है-भरतपुरा। इसी गाँव से ताल्लुकात रखते हैं मधुसूदन बाबू।

ननिहाल कान्धगोपी (गोपालगंज) में जन्म लेने वाले मधुसूदन बाबू की प्राथमिक शिक्षा अपर प्राइमरी संस्कृत पाठशाला, बंगरा (हथुआ) से हुई, फिर इडेन हाई स्कूल (अब डॉ. राजेन्द्र प्रसाद हाई स्कूल, हथुआ) से माध्यमिक एवं राजेन्द्र कॉलेज, छपरा से इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूर्ण हुई। डीएवी कॉलेज, सिवान से बी.ए. (राजनीति विज्ञान एवं गणित) की पढ़ाई पूर्ण करने वाले मधुसूदन बाबू का जीवनपर्यंत शिक्षा से सरोकार रहा।

कला-साहित्य-संस्कृति और गाँव-जवार से जुड़ाव रखने वाले मधुसूदन बाबू का विराट व्यक्तित्व रहा है। उनमें सात-आठ आदमी को अकेले पछाड़ देने की 'शक्ति' थी, उनमें घंटों तबला-ढोलक और हारमोनियम को साधने का 'जज्बा' था, उनमें कठिन से कठिन गणित के सवालों को चुटकी में हल करने का 'हुनर' था। शिक्षक से बिहार वित्त सेवा के अधिकारी बने और उम्दा शायर समीर परिमल लिखते हैं- 'एक पुत्र के रूप में मैं उन्हें जितना जानता-समझता हूँ, एक पाठक के रूप में उनका व्यक्तित्व उससे भी विराट दिखाई दिया।' वहीं, मधुसूदन बाबू के छोटे भाई और बी.एन. मंडल विवि, मधेपुरा के अवकाश प्राप्त कुलपति डॉ. रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव लिखते हैं -

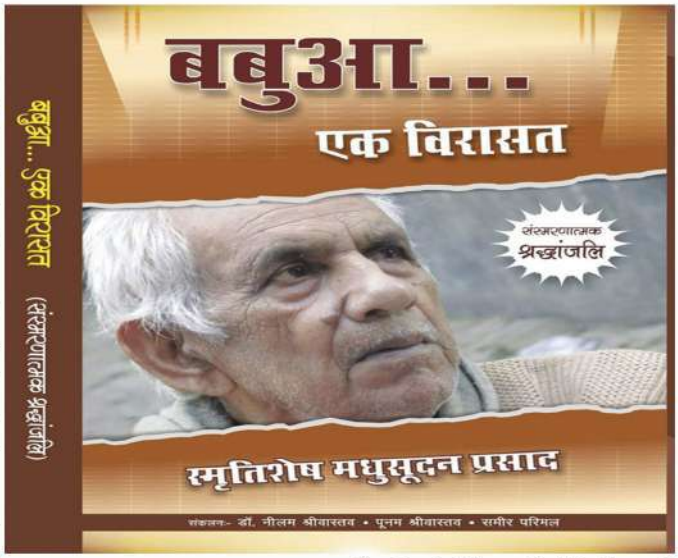

'बबुआ ग्रामीण परिवेश से जुड़े थे और खेती और पारिवारिक व्यवस्था उनकी अभिरुचि थी।'

पुराने सारण जिले में गणित के प्रकांड विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित मधुसूदन बाबू एक ऐसे शिक्षक थे, जिनका सभी विषयों पर समान अधिकार था। और-तो-और यह भी गौरव का विषय है कि जिस विद्यालय से मधुसूदन बाबू की माध्यमिक शिक्षा हुई, बाद में वो उसी विद्यालय के प्रधानाध्यापक हुए।

मधुसूदन बाबू हमेशा लोगों को शिक्षित होने के लिए प्रेरित किया करते थे, उनकी चाहत थी कि बेटियाँ भी पढ़े। माधुरी देवी के चाचा ससुर थे 'बबुआ'। लिखती हैं- 'उन्होंने मेरी शिक्षा का ध्यान रख मुझे प्रेरित किया और उनकी वजह से ही मैंने दसवीं की परीक्षा दी और उतीर्ण हुई'। उनकी पुत्रवधू रूपांजली परिमल (जॉली) की जब शादी हुई थी, तो वो इंटरमीडिएट पास थी, किंतु ससुर की प्रेरणा से बाद में स्नातक तक की पढ़ाई पूर्ण की। लिखती हैं कि उन्होंने बेटी और बहू में कोई फर्क नहीं समझा और रिजल्ट आने की खुशी में उनके द्वारा मिठाइयाँ बाँटी गयी थी।

शिक्षक मधुसूदन बाबू साहसी थे, बलवान थे, सहनशील थे। प्रधानाध्यापक के रूप में प्रशासनिक क्षमता का लोहा मनवाने वाले मधुसूदन बाबू हमेशा सच के साथ खड़े रहे, झूठ या गलत को कतई बर्दाश्त नहीं किये। उनकी बेटी नीलम श्रीवास्तव, जो साहित्य विधा की उत्कृष्ट कलमकार हैं, ने लिखा है कि बाबू जी साहसी थे, एक बार उन्हें डराकर नियम विरुद्ध कार्य कराने की कोशिश की गयी थी, तब उन्होंने कहा था- 'जान के डर से मैं नियम के विरुद्ध कोई कार्य नहीं कर सकता, तुम जो चाहे कर लो।'

कोई बीच में पढ़ाई छोड़ दे, यह मधुसूदन बाबू को नागवार गुजरता। उनकी कोशिश रहती कि हर कोई मुकम्मल पढ़ाई करे। वो स्वयं गरीब छात्रों को निशुल्क पढ़ाते थे। आर्थिक वजह से सत्येन्द्र कुमार राम ने अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी थी, लेकिन 'गुरुजी' की प्रेरणा और मार्गदर्शन से उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी की, आज वो सहकारिता विभाग में पदाधिकारी हैं और उनका भी आलेख इस पुस्तक में संग्रहित है।

जेल अधीक्षक सुजीत कुमार राय ने लिखा- 'गणित से संगीत तक, शिक्षा से साहित्य तक, सरलता से महानता तक, अगर एक व्यक्तित्व में समाया हुआ था, वो पूज्य गुरुजी स्व. मधुसूदन प्रसाद थे।'

'दिल में हजार गम' के बाद भी कैसे परिवार की नैया को खींचा जा सकता है? 'बबुआ...एक विरासत' को पढ़कर जाना-समझा जा सकता है।

वरिष्ठ आइएएस प्रत्यय अमृत के अलावा सेवानिवृत अपर सचिव आनंद बिहारी प्रसाद, विपिन बिहारी श्रीवास्तव, अजय कुमार, ठाकुर ज्वाला प्रसाद, विजय कुमार, ममता वर्मा, मीरा श्रीवास्तव, प्रतीक प्रियदर्शी, रंजीत श्रीवास्तव, पूनम श्रीवास्तव, सच्चिदानंद श्रीवास्तव, अलख निरंजन प्रसाद, शैलेश कुमार श्रीवास्तव, अर्जुन पाठक 'विकल', अरुण कुमार श्रीवास्तव, बलिराम द्विवेदी अनमोल, राकेश कुमार श्रीवास्तव, ओम प्रकाश वर्मा, डॉ. योगेन्द्र शर्मा, डॉ. राजनारायण द्विवेदी, प्रो. हरेन्द्र प्रसाद, डॉ. सी.पी. सिंह, वीरेन्द्र गिरि, बी.के. तिवारी, के.बी. सहाय, सुरेन्द्र नाथ पांडेय, भृगुनाथ राय, विद्यानंद उपाध्याय, डॉ. प्रवीण कुमार द्विवेदी, कमलेश के. मिश्र, विनय कुमार प्रसाद, संजय कुमार श्रीवास्तव, बिन्देश्वरी प्रसाद, महेश प्रसाद, धनंजय कुमार राय, राजेश कुमार सिंह, विवेकानंद उपाध्याय, अभिव्यक्ति नवगीत, अस्तित्व अंकुर, आकांक्षा अनुभूति, वीर प्रताप सिंह, संवेदना स्मृति, अभिरुचि श्रीवास्तव, अभिलाषा आकृति, चेतना जागृति, राहुल कुमार, अलंकार, नेहा अलंकार श्रीवास्तव, अभिव, ईशान परिमल व ईशिता परिमल लिखित संस्मरणात्मक आलेख 'बबुआ...एक विरासत' में है। और-तो-और, मुक्तक, दोहा, गीत, कविता और गजल के माध्यम से भी 'बबुआ' को याद किया गया है।

निश्चित तौर पर, जब किसी शख्स की मृत्यु होती है, तो वो अपने पीछे छोड़ जाते हैं एक भरा-पूरा परिवार, अनगिनत स्मृतियाँ और विराट विरासत...! विरासत को संजोना और 'उनकी' स्मृतियों को अक्षुण्ण रखना जरूरी है।

'बबुआ...एक विरासत' जैसी पुस्तक इसलिए जरूरी है, ताकि वर्तमान और भावी पीढ़ी रू-ब-रू हो सके अपने गौरवशाली 'इतिहास' से और गौरवशाली 'व्यक्तित्व' से।

25 सितंबर

देवानंद

की जयंती पर विशेष

राजू गाइड की रोजी

अमित शर्मा
संपादक

देवानंद आज अगर होते तो सौ साल की उम्र पार कर लेते। वो भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन अदाकारी और अदाएं लोगों के जेहन में आज भी ताजा है। यूं तो उनकी जोड़ी कई नायिकओं के साथ बनी मगर वहीदा रहमान के साथ देवानंद की जोड़ी ने लोगों के बीच अलग ही मुकाम हासिल किया। आज भी वहीदा रहमान का नाम आते ही सचसे पहले फिल्म गाइडह की नायिका रोजी का किरदार आंखों के सामने सजीव हो उठता है। खुद वहीदा रहमान भी कई बार जिक्र कर चुकी है कि गाइड की नायिका रोजी का किरदार उनके निभाए गए विभिन्न किरदारों में सचसे बेहतरीन था। वहीदा रहमान को फिल्म गाइडह देव आनंद की वजह से मिली थी। गाइड की नायिका बहीदा रहमान ही होंगी ये निर्णय देवानंद का था। कई परेशानियों और विरोधों के बावजूद वो अंत तक अपने निर्णय पर कायम रहे। आखिरकार गाइड की नायिका रोजी का किरदार चहीदा रहमान ने ही निभाया फिल्म गाइड कई अर्थों में क्लासिक मानी जाती है। सन् 1965 में जब ये फिल्म रिलीज हुई थी तब भी इसे लीक तोड़ने वाली फिल्म के रुप में देखा गया था। फिल्म तब के फिल्मी फामूलों के साथ-साथ समाज के स्थापित मानकों को भी तोड़ रही थी। देवानंद ने अपनी फिल्म के लिए ऐसा विषय चुन कर बहुत बड़ा रिस्क लिया था। लेकिन फिल्म बॉक्स ऑफिस पर भी जबरदस्त सफल रही। आज इसकी गिनती देवानंद के कैरियर की सबसे बेहतरीन फिल्म के रुप में की जाती है। फिल्म की नायिका के लिए वहीदा रहमान को चुने जाने का किस्सा भी दिलचस्प है। वहीदा रहमान की पहली हिन्दी फिल्म सीआईडी थी। इस फिल्म में उनके साथ देवानंद थे। हालांकि वहीदा रहमान इस फिल्म की नायिका नहीं थी। लेकिन देवानंद के साथ फिल्म में उनके कई दृश्य थे। इस फिल्म से ही उनके और देवानंद के बीच जो केमिस्ट्री बनी, यो हमेशा कायम रही। वहीदा रहमान ने अपने एक इंटरव्यू में खुद कहा था कि पर्दे दें पर उनकी सबसे बेहतरीन के मि स्ट्री देवानंद के साथ ही रही। वहीदा रहमान और देवानंद ने कुल सात फिल्में एक साथ की थी - सीआईडी (1956), सोलहवां साल (1958), काला बाजार (1960), रूप की रानी, चोरों का राजा (1961), बात एक रात की (1962), गाइड (1965) और प्रेम-पुजारी (1970)। इनमें से ज्यादातर फिल्में बड़ी हिट साबित हुई। देवानंद और वहीदा रहमान की जोड़ी को लोगों ने खूब पसंद किया था।इन फिल्मों के कई गाने भी यादगार रहे। आधी सदी बाद भी ये गाने आज भी पसंद किए जाते हैं।

वहीदा रहमान ने अपने समय के लगभग सभी बड़े अभिनेताओं के साथ काम किया। लेकिन उका कहना है कि देवानंद का चार्म सबसे अलग था। वो अपनी अभिनेत्रियों को इतना रिलैक्सर फील करवाते थे कि उनके साथ काम करना बेहद सुविधाजनक हो जाता था। यहीदा रहमान की पहली फिल्म सीआईडी थी। लेकिन शूटिंग पर आने के पहले तक उन्हें ये नहीं पता था कि फिल्म में देवानंद भी है। देवानंद उस वक्त तक एक बड़े स्टार बन चुके थे। यहीदा पहले से देवानंद की बहुत बड़ी फैन थी। सेट पर जब उन्होंने देवानंद को देखा तो वो घबरा-सी गयी। लेकिन देवानंद ने बहुत सहज अंदाज में उनसे बात की। बहीदा रहमान का सारा डर खत्म हो गया। देवानंद ने उन्हें बहुत जल्दी ही सहज कर दिया। उसके बाद उन्हें लगा ही नहीं कि वो एक न्यू कमर हैं। देवानंद की खासियत शायद यहीं थी।

वहीदा रहमान ने अपने एक इंटरव्यू में देवानंद के साथ अपनी मुलाकात का किस्सा सुनाया था। वहीदा जब देवानंद से मिली थी तो वो उन्हें देव साहब कह कर बुला रही थी। लेकिन देवानंद ने उन्हें देव साहब या मि. आनंद बोलने से मना कर दिया। उन्होंने वहीदा से कहा कि वो उन्हें सिर्फ देव बुलाएं। वहीदा रहमान ने कहा कि वो इतनी बदतमीज नहीं कि अपने से सीनियर कलाकार को सिर्फ नाम लेकर बुलाएं। देवानंद ने हंस कर उनसे कहा कि पर्दे पर दोनों को रोमांटिक सीन करने हैं। अगर वो उनके साथ इतनी फार्मल तरीके से पेश आएंगी तो उनसे एक्टिंग ही नहीं होगी। इसके बाद भी जब-जब वो उन्हें देव साहब बुलाती तो देवानंद इधर-उधर ऐसे देखने लगते जैसे उन्होंने कुछ सुना ही नहीं। इसके बाद वो उन्हें देखकर हंस देते। आखिरकार वहीदा रहमान के अंदर से न्यू कमर वाला डर निकल गया। यो देवानंद के साथ सहज हो गयी। इसके बाद से वहीदा रहमान ने देवानंद को हमेशा देव ही बुलाया। दरअसल देवानंद खुद को अपने दोस्तों के बीच देव कहलाना ही पसंद करते थे। वहीदा रहमान इसके बाद कई फिल्मों में देवानंद की नायिका बनी। वो बताती हैं कि देवानंद ने हमेशा उन्हें सपोर्ट किया।

वहीदा रहमान एक ट्रेंड डांसर थीं। उन्होंने बकायदा शास्त्रीय नृत्य की शिक्षा ली थी लेकिन इंड्रस्ट्री के बहुत कम लोगों की इस बात की जानकारी थी। इसलिए हिन्दी फिल्मों में उन्हें ऐसे रोल नहीं मिल रहे थे जिनमें उनकी नृत्य प्रतिभा का प्रदर्शन होता। देवानंद की ये बात पता था कि वहीदा रहमान चहुत अच्छी क्लासिकल डांसर हैं। देवानंद ने जय गाइड बनाने का निर्णय किया ती नायिका के रूप में उनके दिमाग में सिर्फ एक ही नाम आया। ये नाम वहीदा रहमान का था। अपने एक इंटरव्यू में देवानंद कहते हैं कि वहीदा का चुनाव उन्होंने वहीदा की डांसिंग स्किल की वजह से ही किया। साथ ही उनके चेहरे पर एक मासूमियत है जो उन्हें इस रोल के लिए उपयुक्त बनाती थी। ये फिल्म अमेरिका में भी रिलीज होनी थी और नायिका ऐसी होनी चाहिए थी जो पूरी तरह भारतीय लगती। वहीदा इन सभी कसौटियों पर खरी उत्तरती थी। साथ ही वहीदा पहले भी नवकेतन की फिल्म कर चुकी थी और पर्दे पर दोनों के बीच की केमेस्ट्री काफी अच्छी थी।

इसके बाद देवानंद ने आर. के. नारायण का उपन्यास गाइड वहीदा रहमान को पढ़ने भेजा। वहीदा ने पूरा उपन्यास पढ़ा। उन्हें रोजी का रोल चहुत पसंद आया। दरअसल इसकी कहानी अपने समय से बहुत आगे की थी। उस वक्त फिल्मों में ग्रे शेड को भूमिकाएं नायक-नायिका के लिए सोची ही नहीं जाती थी। नायक-नायिका आदर्श के प्रतिमान स्थापित करते हुए ही दिखायी देते थे। लेकिन गाइड के सभी किरदार ग्रे-शेड लिए हुए थे। ये किरदार अच्छे भी थे और बुरे भी थे। साथ ही सभी किरदार सामाजिक मानकों को तोड़ते दिखते थे। फिल्म की नायिका रोजी शादीशुदा थी। फिर भी वो नृत्य में अपना कैरियर बनाने के लिए अपना घर छोड़ देती हैं। साथ ही दूसरे व्यक्ति के साथ प्रेम-संबंध भी स्थापित करती हैं। वहीदा रहमान को कई लोगों ने ये फिल्म नहीं करने की सलाह दी। लेकिन वहीदा को ये रोल इतना चैलेंजिंग लगा कि वो इसे करने को तुरंत राजी हो गयीं। लेकिन अभी राह इतनी आसान नहीं थी। सबसे शुरूआत में देवआनंद ने फिल्म के निर्देशन का जिम्मा राज खोसला को दिया था। राज खोसला के साथ वहीदा रहमान के रिश्ते अच्छे नहीं थे। वहीदा को जब ये पता चला कि राज खोसला इस फिल्म का निर्देशन करने वाले हैं तो उन्होंने फिल्म करने से इंकार कर दिया। हालांकि देवानंद ने उन्हें समझाने की कोशिश की। लेकिन वो नहीं मानी। इस बीच हालात कुछ ऐसे बने कि राज खोसला की बजाए निर्देशन की जिम्मेदारी देवानंद के भाई चेतन आनंद के पास पहुंच गयी। गाइड का निर्माण हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में होना था। चेतन आनंद फिल्म में अपनी पसंदीदा अभिनेत्री प्रिया राजवंश को लेना चाहते थे। प्रिया राजवंश को आपने चेतन आनंद की अधिकांश फिल्मों में देखा होगा जिनमें हकीकत और हीर रांझा जैसी सफल फिल्में शामिल हैं। प्रिया राजवंश डांसर तो अच्छी नहीं भी लेकिन बहुत अच्छी इंग्लिश बोलती थीं। लेकिन देवानंद ने चेतन आनंद को बहीदा रहमान के नाम पर मना लिया। हालांकि बाद में हालात फिर बदले। चेतन आनंद को अपनी महत्वाकांक्षी फिल्म हकीकत की शूटिंग के लिए डिफेंस मिनिस्ट्री से मंजूरी मिल गयी। साथ ही फिल्म के फाइनेंस का भी इंतजाम हो गया। देव आनंद से इजाजत लेकर चेतन आनंद हकीकत के निर्देशन में लग गए। तब देव आनंद ने गाइड की जिम्मेदारी अपने छोटे भाई विजय आनंद यानी गोल्डी को सौंपी। विजय आनंद के साथ वहीदा रहमान पहले काम कर चुकी थी। उनके साथ यो काफी सहज थी। फिर उन्हें फिल्म करने में कोई दिक्कत नहीं हुई। हिन्दी वर्जन के लिए विजय आनंद ने पूरी पटकथा नए सिरे से लिखी। फिल्म दो बार शूट हुई। पहले अंग्रेजी वर्जन और बाद में हिन्दी वर्जन की शूटिंग हुई। वहीदा रहमान के साथ दिक्कत ये थी कि उनकी अंग्रेजी अच्छी नहीं थी। ऐसे में वहीदा रहमान की अंग्रेजी की ट्रेनिंग शुरू हुई। खास बात ये ही कि वहीदा को अंग्रेजी सिखाने का जिम्मा उठाया अमेरिकी लेखिका और नोबेल पुरस्कार विजेता पर्ल एस. बक ने। पर्ल ने गा

इड के अंग्रेजी वर्जन की स्क्रिप्ट लिखी थी। पर्ल का मानना था कि रोल एक भारतीय महिला का था इसलिए वहीदा अगर भारतीय एक्सेंट में भी इंग्लिश बोलती हैं तो फिल्म में इससे कोई दिक्कत नहीं होगी। बस उनकी बात लोगों को समझ आनी चाहिए। अपनी अंग्रेजी सुधारने के लिए वहीदा रहमान ने बहुत मेहनत की। इसके साथ ही वहीदा रहमान की डांस ट्रेनिंग भी शुरू की गयी। वहीदा ने पिछले कई सालों से नृत्य लगभग छोड़ा हुआ था। उन्हें फिर से लय में आना जरूरी था। अपने नृत्य कौशल में निखार लाने के लिए सुचह तीन बजे से ही वहीदा अपनी ट्रेनिंग शुरू कर देती थी। वहीदा ने भी पूरी मेहनत और लगन के साथ अपने किरदार को निभाया और गाइड उनके कैरियर की सबसे बेहतरीन फिल्म साबित हुई। वहीदा रहमान को फिल्म में अपने डांस के दृश्यों से इतना प्यार था कि उन्होंने देवानंद से रिक्वेस्ट की कि फिल्म में भले ही उनकी भूमिका कहीं और से काट दी जाए लेकिन डांस वाले सभी दृश्यों को फिल्म में रखा जाए।

गाइड में रोजी के किरदार को वहीदा रहमान ने सजीव कर दिया। अमेरिका में अंग्रेजी वर्जन तो ज्यादा सफल नहीं रहा लेकिन भारत में फिल्म के हिन्दी वर्जन ने सफलता के झंडे गाड़ दिए। उस साल के ज्यादातर बड़े अवार्ड गाइड के हिस्से गए। गाइड को आज एक कल्ट फिल्म का दर्जा हासिल हैं। देवानंद को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और वहीदा रहमान को भी सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के फिल्म फेयर अवार्ड से नवाजा गया। फिल्म की सफलता ने उनके कैरियर को ऊंचाईयों पर पहुंचा दिया। उनका नाम बेहतरीन अभिनेत्रियों में शामिल ही गया। अभिनय के लिए पिछले साल उन्हें दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार मिलने के बाद भी वहीदा रहमान ने ये स्वीकार किया है कि उनकी सफलता में देवानंद का बड़ा हाथ था।

Mental Health Awareness Among Youth: Breaking the Stigma

GHATA SHARMA

In recent years, mental health awareness among youth has gained significant traction, highlighting the critical need for open conversations surrounding this often-taboo topic. The youth population faces unique challenges, including academic pressure, social media influence, and evolving family dynamics. These stressors can lead to mental health issues like anxiety, depression, and other emotional disturbances. Unfortunately, societal stigma still surrounds mental health, often causing young people to suffer in silence rather than seek the help they need.

One of the most significant barriers to mental health awareness is the stigma that often accompanies mental illness. Many young individuals fear being labeled or misunderstood, leading them to keep their struggles hidden. This stigma can deter them from reaching out for support, whether from friends, family, or mental health professionals. Breaking this cycle of silence is crucial for creating an environment where youth feel safe discussing their mental health.

Educational institutions play a pivotal role in fostering a culture of openness. Schools and colleges can implement programs that educate students about mental health, teaching them to recognize signs of distress in themselves and others. Workshops, seminars, and counseling sessions can equip students with the knowledge they need to address mental health issues proactively. When educational institutions prioritize mental health, they send a powerful message that it is acceptable to talk about these issues without fear of judgment.

Social media can also be a double-edged sword in the discourse around mental health. On one hand, it can perpetuate stigma; on the other, it has the potential to be a platform for awareness. Influencers and mental health advocates are increasingly using social media to share their experiences and provide support. By sharing their stories, they challenge the stereotypes associated with mental health and encourage others to seek help. Campaigns promoting mental health awareness have gained traction on platforms like Instagram and TikTok, reaching millions of young people worldwide.

Moreover, integrating mental health education into the curriculum can empower students with the tools they need to navigate their emotions effectively. Teaching coping strategies, stress management techniques, and emotional resilience can equip youth with skills that will benefit them throughout their lives. By normalizing mental health discussions, schools can create an environment where students feel comfortable sharing their feelings.

Breaking the stigma surrounding mental health is essential for fostering a culture of understanding and compassion. By encouraging open conversations and providing educational resources, we can empower young people to prioritize their mental health and seek help when needed. As a society, it is our responsibility to support our youth in their journey toward mental well-being, ensuring they have the resources and environment necessary to thrive.

RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailash Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Amit Sharma responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.
Email:
youngster@tecnia.in